49

''मेरे अविश्वास का उपाय कर''

मत्ती 17:14-20; मरकुस 9:14-29; लूका 9:37-43, एक निकट दृष्टि

मैं अपने आप को बाइबल के उन कई लोगों के साथ मिला सकता हूं, जिन्होंने परमेश्वर के साथ चलने के लिए संघर्ष किया था। मैं एलिय्याह के साथ अपने आप को मिलाता हूं, जो निराश हो गया था (1 राजा 19:10)। मैं यिर्मयाह के साथ रोता हूं, जिसे लगा था कि उसकी सारी मेहनत बेकार गई है (यिर्मयाह 9:1; 13:17)। मुझे पतरस अपना रिश्तेदार लगता है, जो अक्सर बिना विचार किए ही बोल देता था (लूका 9:33)। उन लोगों की सूची में, जिनके साथ मैं अपने आप को मिलाता हूं, सबसे ऊपर वह पिता है, जिसने यीशु से कहा था, ''मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर'' (मरकुस 9:24)। जब इस आदमी ने प्रभु से अपने पुत्र को चंगा करने के लिए कहा, तो मसीह का उत्तर था, ''विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ हो सकता है'' (मरकुस 9:23)। तभी यह आदमी पुकार उठा था, ''मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर।''

मसीहियत के लिए विश्वास से बढ़कर कोई, विषय नहीं है और न ही विश्वास को मजबूत करने से अधिक कोई आवश्यकता है। पौलुस ने लिखा है:

> क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि उस में परमेश्वर की धार्मिकता *विश्वास से, और विश्वास के लिए* प्रकट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा (रोमियों 1:16, 17)।

NIV में ''*आरम्भ* से *अन्त तक* विश्वास से होने वाली धार्मिकता'' है। द न्यू सैंचुरी वर्ज़न का अनुवाद है कि परमेश्वर की धार्मिकता ''विश्वास के साथ आरम्भ भी होती है और समाप्त भी।''

''विश्वास बिना उसे [अर्थात परमेश्वर को] प्रसन्न करना अनहोना है'' (इब्रानियों 11:6क)। ''विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से'' हमारा ''उद्धार'' होता है (इफिसियों 2:8क)। मसीही पथ पर हम ''रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं'' (2 कुरिन्थियों 5:7)। विश्वास वह ढाल है, जो शैतान से हमारी रक्षा करती है (इफिसियों 6:16)। विश्वास ''वह विजय [है] जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है'' (1 यूहन्ना 5:4ख)। विश्वास का अन्तिम ''परिणाम'' हमारे प्राणों का ''उद्धार'' होगा (1 पतरस 1:9)।

विश्वास के महत्व पर विचार करते हुए, हम भी, यह पुकारने की परीक्षा में पड़ सकते हैं कि ''मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर!'' पहली बार यह विनती करने वाले आदमी का अध्ययन करते हुए, हम ऐसे कारकों पर विचार करेंगे, जिनसे विश्वास कमज़ोर होता है। सबसे बढ़कर, हमें यह सीखने की आवश्यकता है कि विश्वास को कैसे मज़बूत किया जा सकता है।

विश्वास की एक परख (मत्ती 17:14-18; मरकुस 9:14-27; लूका 9:37-43)

कहानी के आरम्भ में यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना रूपान्तर पर्वत से अर्थात शान्ति की चोटी से झगड़े की तराई में आ गए थे। यही जीवन है और परमेश्वर ने इसे ऐसा ही चाहा है। पतरस की तरह, हम भी प्रभु के साथ पहाड़ की चोटी पर रहने को प्राथमिकता दे सकते हैं (मत्ती 17:4), परन्तु जीवन वहां जिया जाना आवश्यक है, जहां लोग हैं, जहां समस्याएं हैं।

जब मसीह और उसका छोटा सा झुण्ड वहां पहुंचा, जहां उन्होंने नौ दूसरे प्रेरितों को छोड़ा था, ''तो देखा कि ... शास्त्री उनके साथ विवाद कर रहे हैं'' (मरकुस 9:14)। शास्त्री सम्भवतया यीशु के दावों को और उसकी सेवकाई की वैधता को चुनौती दे रहे थे। बहस को देखने वाली एक उत्सुक भीड़ थी, जैसे कि आज कारों की टक्कर और किसी दूसरी विपत्ति को देखने के लिए इकट्ठी हो जाती है।[1]

एक मूर्ख लड़का

यीशु ने पूछा कि समस्या क्या है (मरकुस 9:16)। उसे मालूम था कि वहां क्या हो रहा है, परन्तु वह ध्यान अपमानित हुए चेलों से अपनी ओर बंटाना चाहता था। भीड़ में से एक आदमी आगे बढ़ा। मसीह के कदमों में गिरता हुआ, वह पुकारने लगा, ''हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर'' (मत्ती 17:15क)।

उस आदमी का लड़का, जो उसका इकलौता पुत्र था (लूका 9:38), बहुत बीमार था: वह लड़का न सुन और न बोल पाता था[2] (मरकुस 9:17, 25)। वह दुष्टात्मा से ग्रस्त था (मत्ती 17:18; लूका 9:39, 42)। दुष्टात्मा उसे भूमि पर पटक देता, जहां वह मुंह में फेन भर लाता, दांत पीसता और उसके मुंह से थूक निकलता था (मरकुस 9:18; लूका 9:39)। दुष्टात्मा के कारण वह कभी आग में और कभी पानी में गिर पड़ता था (मत्ती 17:15; मरकुस 9:22)।[3]

प्राचीन काल के एक अन्धविश्वास के कारण कि लड़के को पड़ने वाले दौरे चांद के कारण थे, उसके पिता ने उसे ''moonstruck (पागल)'' कहा (मत्ती 17:15; मूल पवित्र शास्त्र)। इसका एक मूल अनुवाद ''lunatic'' (मूर्ख) होगा (देखें KJV और अपडेटिड NASB) जो ''चांद'' के लिए लातीनी शब्द *luna* से लिया गया है। क्योंकि अब ''ल्यूनैटिक'' शब्द का इस्तेमाल किसी ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है, जो पागल हो, इसलिए कुछ अनुवादों में ''मिर्गी'' शब्द (देखें RSV, ASV, और हिन्दी अनुवाद) का प्रयोग किया गया है। अनुवादकों ने सम्भवतया ऐसा मिर्गी के बड़े दौरे से मिलते-जुलते लक्षणों के कारण किया। परन्तु यह समझ लें कि यह लक्षण मिर्गी के दौरों के लिए ज़िम्मेदार ''दिमाग़ की असामान्य विद्युत गतिविधि'' से नहीं,[4] बल्कि दुष्टात्मा से ग्रस्त होने के कारण था (मत्ती 17:18; मरकुस 9:25; लूका 9:42[5])।

एक हताश शिक्षक

अपने सामने के दृश्य से प्रभु परेशान था: कष्टप्रद भीड़, लड़ने पर उतारू शास्त्री, घबराए हुए चेले और परेशान पिता। हमें यीशु के मानवीय पक्ष की बहुत कम झलक मिलती है, जिसमें उसने कहा, ''हे अविश्वासी और हठीले लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा?''[6] (मत्ती 17:17क)।[7] उसे यह कहते सुनकर कि ''मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा?'' हम उसके शरीर और पिता के पास लौटने की उसकी तड़प का बोझ महसूस करते हैं। उसे यह कहते हुए सुनकर कि ''कब तक मैं तुम्हारी सहूंगा?'' हमें शरीर की ओर ध्यान लगाने वाले और मन के अन्धे मनुष्यों के साथ सम्प्रेषण करने की कोशिश से उसकी हताशा का अहसास होता है।

कुछ लोग ''अविश्वासी और टेढ़ी जाति'' मसीह द्वारा सम्बोधित किए गए लोगों के झुण्ड को मानते हैं। मुझे वहां उपस्थित लोगों में से किसी को भी छोड़ने का कोई कारण दिखाई नहीं देता, चाहे वह बिना विश्वास वाले शास्त्री हों, दोहरे विश्वास वाले लोग हों, डांवांडोल विश्वास वाले उसके चेलें हों या वह पिता, जिसका विश्वास डगमगाया हुआ था।[8] ये सब *उस* ''अविश्वासी ... जाति'' के प्रतिरूप थे और उस संसार जैसे ही थे, जिसमें वे रहते थे।

पिता की विनती का उत्तर यीशु ने ''मनुष्य के विश्वास की निर्धनता'' के अनुसार नहीं बल्कि अपने ''अनुग्रह के धन के अनुसार'' दिया[9] (देखें इफिसियों 1:7)। उसने उस पिता से कहा, ''अपने पुत्र को यहां ले आ'' (लूका 9:41ख; मत्ती 17:17ख; मरकुस 9:19ख भी देखें)।

एक विचलित होने वाला पिता

लोग लड़के को यीशु के पास ला ही रहे थे कि दुष्टात्मा ने उसे मरोड़ कर फैंक दिया। वह जवान ''मुंह से फेन बहाते हुए लोटने लगा'' (मरकुस 9:20)। प्रभु ने उस पिता से लड़के की हालत पूछी (मरकुस 9:21)-इसलिए नहीं कि उसे जानने की आवश्यकता थी,

बल्कि इसलिए क्योंकि पिता को मसीह के बिना अपनी निराशा का पता होना आवश्यक था। पिता ने संक्षिप्त शब्दों में उत्तर दिया ''परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर तरस खाकर हमारा उपकार कर''[10] (मरकुस 9:22ख)।

मुझे नहीं लगता कि उस व्यक्ति के शब्द कि ''यदि तू कर सकता है?'' (मरकुस 9:23क) सुनकर मसीह की आंखों में चमक आने की बात कहकर मैं यीशु के उत्तर को कुछ अधिक ही पढ़ रहा हूं। स्पष्टतया वह पिता इस उम्मीद से विश्वास के साथ आया था कि प्रभु उसके लड़के को चंगा कर देगा। परन्तु चेलों द्वारा उसे चंगा न कर पाने के कारण, शास्त्रियों के आक्रमण से उसका विश्वास डोल गया था। उसकी विनती ''*यदि* तू कर सकता है ...'' से कोई फर्क नहीं पड़ा।

यीशु ने उसे बताया, ''विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ हो सकता है'' (मरकुस 9:23ख)। इस सामर्थी कथन के दो अवलोकन होने चाहिए। एक तरफ तो अधिकतर लोग यह समझते हैं कि यह कथन कुछ योग्यता की मांग करता है। यह दावा करना कि विश्वास करने वाले लोगों के पास असीमित, बिना शर्त के सामर्थ होती है, उपहासजनक बात है। दूसरी ओर हमें इस बात को नज़रअन्दाज नहीं करना चाहिए कि विश्वास से बहुत कुछ हो सकता है। विलियम बार्कले ने लिखा है, ''किसी चीज़ तक निराशापूर्ण मन से जाना, इसे निराश बनाना ही है; विश्वास के मन से किसी चीज़ तक पहुंचने का अर्थ उसे एक सम्भावना बनाना है।''[11] उसने ''सम्भव की भावना'' की आवश्यकता का सुझाव दिया।[12]

मसीह के यह कहने के बाद कि ''विश्वास से सब कुछ हो सकता है,'' ''बालक के पिता ने तुरन्त गिड़गिड़ाकर कहा; हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर'' (मरकुस 9:23ख, 24)। इन शब्दों में एक विनती है: ''यह सच है कि मेरा विश्वास वैसा नहीं है जैसा होना चाहिए, परन्तु इसके लिए मेरे बेटे को सजा न दें। कृपया मेरी सहायता करें!''

विश्वास बढ़ाने वाला प्रदर्शन

यीशु ने लड़के की ओर मुड़कर ''अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डांटा[13]; कि हे गूंगी और बहिरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं, उस में से निकल आ, और उस में फिर कभी प्रवेश न कर''[14] (मरकुस 9:25)। दुष्टात्मा उसे छोड़कर चुपके से नहीं गई। वह ज़ोर से पुकारकर और उस जवान को ''बहुत मरोड़कर'' फैंक गई (मरकुस 9:26क)। आर.ऐलन कोल ने इस प्रदर्शन को ''[एक] पराजित शत्रु का कमज़ोर रोष'' कहा है।[15] अन्ततः, झिझकते हुए, दुष्टात्मा लड़के में से ''निकल आई'' (मरकुस 9:26ख)।

लड़का बुरी हालत में बेजान-सा पड़ा रहा। वह ''मरा हुआ-सा हो गया, यहां तक कि बहुत से लोग कहने लगे, कि वह मर गया'' (9:26ग)। ''परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़ कर उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया'' (मरकुस 9:27)। फिर वह मार्मिक पल आया, जब मसीह ने ''लड़के को उसके पिता को सौंप दिया''[16] (लूका 9:42)। मनुष्य असफल हो गए थे, परन्तु यीशु नहीं। इस क्षण के बारे में, बर्टन कॉफ़मैन ने लिखा है:

> यहां पूरे समय से अनन्तकाल की भविष्यवाणी है। पीढ़ियां आकर प्रभु को नमस्कार करती हैं; अविश्वासी और ढीठ होकर अक्खड़ हो सकते हैं; और प्रभु के चेले भी, आत्मिक बातों की उपेक्षा करने के कारण अपने आप को जीवन की समस्याओं का सामना करने के लिए शक्तिहीन पा सकते हैं; पर मसीह और उसका पवित्र विश्वास हमेशा सफल है ''अधोलोक के फाटक'' उस पर प्रबल न आएंगे ...।[17]

एक बार फिर मसीह ने अपने पिता की महिमा की थी, जिससे ''सब लोग परमेश्वर के महासामर्थ से चकित हुए'' (लूका 9:43)।

विश्वास की सामर्थ (मत्ती 17:19-21; मरकुस 9:28, 29)

जब यीशु और उसके चेले अकेले थे, तो उन्होंने उससे पूछा, ''हम इसे क्यों नहीं निकाल सके'' (मत्ती 17:19; देखें मरकुस 9:28[18])। उनका हैरान होना सही था। मसीह ने उन्हें ''अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया था कि वे उन्हें निकालें'' और उन्हें विशेष तौर पर ''अशुद्ध आत्माओं को निकालने'' का निर्देश दिया था (मत्ती 10:1, 8; देखें मरकुस 6:7)। यह उन्होंने किया था, क्योंकि मरकुस लिखता है कि उन्होंने ''बहुतेरे दुष्टात्माओं को निकाला'' था (मरकुस 6:13क)। इसलिए जब उस पिता ने व्याकुलता दिखाई, तो उन्हें लगा होगा कि कोई मुश्किल नहीं है। मैं उन्हें दृढ़तापूर्वक यह कहने की कल्पना कर सकता हूं कि ''यीशु यहां नहीं है, पर चिंता वाली कोई बात नहीं है; हम सम्भाल लेंगे! तू अपने बेटे को ले आ!'' मैं उनके बार-बार कोशिश करने के बावजूद दुष्टात्माओं को न निकालने पर बढ़ती परेशानी की भी कल्पना कर सकता हूं।

विश्वास की कमी

यीशु ने समझाया कि उनके प्रयास सफल क्यों नहीं हो पाए थे: ''अपने विश्वास की घटी के कारण''[19] (मत्ती 17:20क)। प्रेरितों को अपने ऊपर कुछ तो विश्वास था, वरना वे लड़के को चंगा करने का प्रयास न करते; परन्तु कहीं न कहीं उनके विश्वास में कमी थी। प्रभु ने बाद में कहा, ''क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे[20] कि यहां से सरक कर वहां चला जा, तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए अनहोनी न होगी''[21] (मत्ती 17:20ख[22])।

पहाड़ के मसीह के उदाहरण से कई लोग आकर्षित होते और उलझन में पड़ जाते हैं। उसने बाद में विश्वास से प्रार्थना करने के महत्व पर ज़ोर देने के लिए इसी उदाहरण का इस्तेमाल करना था (मत्ती 21:21, 22; मरकुस 11:22-24)।[23] मुझे एक बूढ़ी स्त्री की कहानी याद आती है, जिसे कुएं में से पानी लाने के लिए पहाड़ी पर चढ़ना था। इन आयतों को पढ़कर, उसने प्रार्थना की, ''हे परमेश्वर, मैं विश्वास करती हूं! इसलिए मेहरबानी करके वह पहाड़ी हटा दे!'' प्रार्थना करने के बाद जब उसने ऊपर देखा, तो हैरान रह गई, ''जैसा कि मुझे उम्मीद थी! यह तो वहीं है!'' साफ़ कहें तो उसकी प्रार्थना विश्वास से की

गई प्रार्थना नहीं थी।

परन्तु जब हम मूल अर्थों में अर्थात पृथ्वी से भौतिक फूट निकलने के अर्थों में सोचते हैं, तो इस आयत से अन्याय करते हैं। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि यीशु और उसके चेलों ने कहीं सचमुच में किसी पहाड़ को हिलाने की कोशिश की हो। प्रभु के आत्मिक कार्यक्रम में ऐसे आश्चर्यकर्म का कोई उद्देश्य नहीं था।

मसीह के समय में पहाड़ों का इस्तेमाल आम तौर पर सांकेतिक भाषा के लिए किया जाता था। पहाड़ सम्भवतया कोई बहुत बड़ा कार्य होता था, जिससे लोग परिचित होते थे। हम ''दुखों का पहाड़''[24] या ''राई का पहाड़ बनाना'' मुहावरों का इस्तेमाल करके ऐसे ही सांकेतिक अर्थ देते हैं।

यहूदियों में, ''पहाड़ हटाना'' रुकावटों पर काबू पाने के लिए एक प्रसद्धि रूपक था (देखें यशायाह 40:4; 49:11; 54:10)। रब्बी लोग पहाड़ जैसी लगने वाली रुकावटों को दूर करने के लिए ऐसे वाक्यांश का इस्तेमाल करते थे।[25] मत्ती 17 अध्याय में निश्चय ही यह इसी अर्थ में इस्तेमाल किया गया है। इस पर विचार करें: जीवन द्वारा हमारे मार्ग में रखे जाने वाले कुछ ''पहाड़ों'' की तुलना में मिट्टी और पत्थर के पहाड़ कुछ भी नहीं हैं। मुझे मिट्टी हटाने वाली मशीन, उस मशीन का चालक और कोई समय सीमा न दी जाए तो मैं हर पहाड़ को गिरा सकता हूं, परन्तु मनुष्य जाति की धरती पर कठिनाइयों के पहाड़ों के बारे में मुझ में ऐसा आत्मविश्वास नहीं है।

प्रेरितों ने बाद में पीड़ा और सताव के ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों का सामना करना था (देखें मत्ती 5:11; प्रेरितों 8:1, 3)। उन्हें यह आश्वासन नहीं चाहिए था कि वे पृथ्वी पर मौजूद पत्थरों के ढेरों से छुटकारा पा सकते हैं। उन्हें यह पता होना आवश्यक *था* कि प्रभु की सहायता से वे शैतान द्वारा प्रेरित और मनुष्य द्वारा बनाए गए उन्हें निराश करने वाले पहाड़ों को पार कर सकते हैं।

मसीह अपने अनुयायियों को आश्वस्त कर रहा था कि वे किसी भी कठिनाई पर विजय पा सकते हैं *यदि,* और यदि उनमें राई के बीज जितना विश्वास हो। राई का बीज, जो सब बीजों में से छोटा होता है, यीशु ने जिसका इस्तेमाल अक्सर एक संकेत के रूप में किया था, जो अत्यधिक छोटा है (मत्ती 13:31; लूका 13:19; 17:5, 6)। मत्ती 17:20 में जो अन्तर बताया गया है, वह उसके सुनने वालों की जानकारी में सबसे छोटे (राई के बीज) और सबसे बड़े (पहाड़) के बीज का अन्तर था। इस प्रकार प्रभु ने विश्वास की अद्वितीय सामर्थ पर ज़ोर दिया।

परन्तु उदाहरण के रूप में राई के बीज का इस्तेमाल करते समय मसीह के मन में केवल उसका आकार ही नहीं था। यद्यपि NASB में ''राई के दाने के आकार जितना विश्वास'' लिखा है, परन्तु मूल बाइबल में ''आकार'' शब्द नहीं है। यूनानी बाइबल में ''राई के बीज *जितना* विश्वास'' है (हिन्दी व KJV अनुवाद देखें)। इस बीज में कई गुण हैं, जिनका सम्बन्ध उस विश्वास से है, जो हम में होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर :

- राई का बीज छोटा है, परन्तु वास्तविक है।
- राई का बीज छोटा है, परन्तु जीवित है, जैसे हमारा विश्वास होना चाहिए (देखें याकूब 2:26)।
- राई का बीज छोटा है, परन्तु इसकी क्षमता बड़ी है (देखें लूका 13:19)।
- राई का बीज छोटा और निर्बल है, परन्तु यह अपने आस-पास की मिट्टी की सामर्थ को स्वीकार करने को तैयार[26] है।

चौथा गुण सबसे निर्णायक है। हमारे विश्वास के *आकार* का उतना महत्व नहीं है, जितना हमारे विश्वास के *केन्द्र* का है। पौलुस ने कहा था, ''... मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13ख)। यह बहुत करके ''विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ हो सकता है'' (मरकुस 9:23ख) जैसा है। परन्तु पौलुस की बात के आरम्भ पर ध्यान दें: ''*जो मुझे सामर्थ देता है उस में* मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13)। हमारा विश्वास हमें उतनी सामर्थ नहीं देता जितनी वह देता है, जिसमें हम विश्वास करते हैं। कल्पना करें कि आप सड़क पर चल रहे हैं और प्रचण्ड नदी पर अटके एक पुल पर आ गए हैं। पुल को आप तब तक पार नहीं कर पाएंगे, जब तक आपको *विश्वास* नहीं होता कि यह आपको सहारा देगा। परन्तु इस पर चलते हुए क्या आपको इससे सहारा मिलता है? मुझे उम्मीद है कि आप समझ गए हैं कि मैं क्या कहना चाहता हूं: आइए हम अपने विश्वास के आकार की चिंता न करें क्योंकि हम वही होंगे, जिस में हम विश्वास रखते हैं।

यीशु की बात कि ''विश्वास करने वालों के लिए सब कुछ हो सकता है'' उसकी बाद की घोषणा को ध्यान में रखकर विचार की जानी चाहिए कि ''परमेश्वर *से* सब कुछ हो सकता है'' (मत्ती 19:26)। शक्ति के स्रोत के बिना कोई शक्ति नहीं है। पौलुस ने लिखा है, ''मैं उसे जिसकी मैंने प्रतीति की है, जानता हूं; और मुझे निश्चय है, कि वह मेरी थाती की ... रखवाली *कर सकता है* '' (2 तीमुथियुस 1:12)। ह्यूगो मेकोर्ड ने इस आयत के पहले भाग का अनुवाद इसका प्रकार किया है, ''मैं *उसे*, जिस पर मैंने भरोसा किया है, जानता हूं ...।''[27]

प्रार्थना में चूक

मरकुस द्वारा लिखित, प्रेरितों को यीशु के उत्तर पर विचार करते हुए इन सब बातों को मन में रखें। उस लेखक के अनुसार, जब चेलों ने पूछा कि वे दुष्टात्मा को क्यों नहीं निकाल पाए, तो प्रभु ने उत्तर दिया कि ''यह जाति[28] बिना प्रार्थना किसी और उपाय से निकल नहीं सकती''[29] (मरकुस 9:29)। यदि हम इस वाक्य को अलग कर दें, तो इससे यह प्रभाव जाएगा कि प्रेरित दुष्टात्मा को इसलिए नहीं निकाल पाए, क्योंकि उन्होंने प्रार्थना करने की कोशिश की, पर वे प्रार्थना नहीं कर पाए थे। परन्तु यदि आप कहानी की समीक्षा करें तो पाएंगे कि दुष्टात्मा को निकालने से पहले *यीशु ने* प्रार्थना नहीं की थी। परन्तु उसने उस आत्मा को लड़के से निकल जाने की आज्ञा देने से पहले पहाड़ पर रातभर परमेश्वर से

बातचीत अवश्य की थी (देखें लूका 9:28)।

अधिक सम्भावना है कि प्रार्थना का हवाला यह संकेत देता है कि चेलों ने सामान्य अर्थ में अपने जीवन में प्रार्थना की अनदेखी की थी। प्रार्थना ''टोना'' नहीं है, जिसके उच्चारण से अद्‌भुत बातें हो जाएं; प्रार्थना तो संसार के सृष्टिकर्त्ता पर अपनी निर्भरता को स्वीकार करना है। बहुत से लेखकों का मानना है कि प्रेरितों के असफल होने का कारण यह था कि दुष्टात्मा को निकालने के लिए उनका विश्वास परमेश्वर से हटकर अपने ऊपर हो गया था। जॉन फ्रैंक्लिन कार्टर ने सुझाव दिया है कि वे ''विवेकपूर्ण ढंग से परमेश्वर पर निर्भर होने के बजाय अति आत्मविश्वास से भर गए'' थे।[30] शिमशोन की तरह वे लड़ने तो चले गए थे, पर उन्हें पता नहीं था कि उनकी सामर्थ ने उनका साथ छोड़ दिया है (न्यायियों 16:20)।

हम में से किसी के साथ भी ऐसा होना कितना आसान है! परमेश्वर हमें दान देता और हमारे प्रयासों में आशीष देता है, और यह तब तक मिलती रहती है, जब तक हम तर्क देने के लिए *अपनी* सामर्थ पर, निर्णय लेने के लिए *अपनी* बुद्धि पर और काम करने के लिए *अपनी* क्षमता पर विश्वास नहीं करने लगते। जब हम अपने ऊपर विश्वास करने लगते हैं, तो आत्मिक विनाश अधिक दूर नहीं होता!

यह वह आग है, जो बुझनी नहीं चाहिए, इसमें ईंधन डालते रहना आवश्यक है।[31] यदि हम चाहते हैं कि बैटरी प्रकाश देती रहे, तो उसे बार-बार चार्ज करते रहना आवश्यक है। इसी प्रकार आत्मिक जीवन को मजबूत रखने के लिए प्रभु के साथ सम्बन्धों को ताज़ा करते रहना आवश्यक है। याकूब ने कहा है, ''परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा'' (याकूब 4:8क)। यशायाह नबी ने लिखा था कि ''जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे'' (यशायाह 40:31)। विश्वास का स्रोत कहानी की समीक्षा कर लेने के बाद, आइए कुछ समय के लिए इसकी व्यक्तिगत प्रासंगिकता बनाते हैं।[32]

संदेह के स्रोत

इस विवरण में पहली बात जो हमारे सामने आती है, वह यह है कि इस परिस्थिति में कई लोगों को अपने विश्वास से संघर्ष करना पड़ा, जिसमें वह पिता तथा प्रेरित भी थे। लोग आज अपने विश्वास से संघर्ष करते हैं। इसके कुछ कारण कि ऐसा क्यों है, हमारे बाइबल पाठ में मिल सकते हैं।

बुराई की समस्या। सम्भवतया लोगों के संदेह का पहला कारण यह है कि उन्होंने भले लोगों के साथ बुरा होते देखा है। इस घटना में, हमें ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि इतने भयंकर सताव का दोषी लड़का किसी भी प्रकार से दोषी है। इस प्रश्न का कि भले लोगों के साथ बुरा क्यों होता है, तुरन्त उत्तर तो कोई नहीं है,[33] पर हमारी कहानी के दो पहलुओं पर ध्यान देना लाभकारी है: (1) अन्त में, सब कुछ ठीक हो गया, और (2) यीशु ने इस अवसर का इस्तेमाल अपने पिता को महिमा देने के लिए किया (लूका 9:43)।[34]

चेलों की लाचारी। प्रेरित वहां असफल हो गए, जहां उन्हें सफल होना चाहिए था।

लोग कई बार मसीही लोगों की कमियों से भ्रमित हो जाते हैं और परमेश्वर में अपने विश्वास को इससे प्रभावित होने देते हैं। उन्हें यह समझना आवश्यक है कि हमारा भरोसा मनुष्यों में नहीं, जो हमें निराश ही करते हैं, बल्कि उसमें होना आवश्यक है, जो अपने खोजने वालों को कभी निराश नहीं करता (भजन संहिता 9:10)।

संसार के आक्रमण। पिता का कमज़ोर विश्वास चेलों की असफलता के कारण ही नहीं, बल्कि शास्त्रियों के हमले के कारण भी था। हर पुलपिट के लिए, जहां से विश्वास का प्रचार होता है, शैतान के पास संदेह व्यक्त करने के हज़ारों रास्ते हैं–और यह बात आम लोगों पर विपरीत असर करती है। हमें संदेहवाद के दूतों से अपने कान बन्द करना और निश्चितता के सुसमाचार प्रचारकों के लिए अपने कान खोलना सीखना चाहिए।

अहं की वास्तविकता। पिता को यीशु की डांट से अपनी जांच करने का अवसर मिला, जिससे उसने अपने विश्वास की कमज़ोरी को माना। यदि हम अपने साथ ईमानदार हैं, तो हम मान लेंगे कि हम वह नहीं हैं, जो हमें होना चाहिए। यह वास्तविकता हम में से कइयों के लिए बहुत बड़ी रुकावट सिद्ध होती है। निराशा केवल निराशा को ही जन्म दे सकती है, जो संदेह को जन्म देती है। पहले दिया गया एक वाक्य रेखांकित कर लें: यीशु ने मनुष्य के विश्वास की निर्धनता के अनुसार नहीं, बल्कि अपने अनुग्रह के धन के अनुसार दिया। निराश होने पर इस सच्चाई को याद रखें।

ये तथा अन्य कारण कई लोगों के विश्वास से गिरने का कारण हैं। हो सकता है कि इन्होंने हमें भी प्रभावित किया हो। लेखक जॉन वैस्टरहॉफ ने विश्वास की चार किस्में बताईं,[35] जिन्हें हम विश्वास के सितारों के रूप में मान सकते हैं: (1) *अनुभवी विश्वास* बच्चों का विश्वास है, जिसे वे अपने माता-पिता और दूसरों के अनुभव से सीखते हैं। (2) *सम्बद्ध विश्वास*[36] बड़े बच्चों और बहुत से वयस्कों का विश्वास है कि यह विश्वास विश्वासी लोगों से जुड़े होने से मिलता है। (3) *खोजी विश्वास* प्रश्न पूछने वाला विश्वास है, जो व्यक्तिगत विश्वासी बनने को संघर्षरत है। (4) *अपना विश्वास* व्यक्तिगत विश्वास है, जो तीसरे स्तर से सफलतापूर्वक आगे बढ़ गया। यह सुझाव दिया जाता है कि 70 प्रतिशत लोग पहले दो स्तरों से कभी आगे नहीं बढ़ते। यह भी सुझाव दिया गया है कि यदि कोई व्यक्ति दूसरे स्तर से आगे नहीं बढ़ता तो उस व्यक्ति के जीवन में किसी समय कुछ ऐसा हो जाएगा, जो उसके विश्वास को डांवांडोल करके[37] प्रभु के साथ उसके सम्बन्ध को खोखला कर देगा।

आप इन तीन निष्कर्षों से सहमत हों या न हों परन्तु हम इस बात से सहमत हो सकते हैं कि विश्वास का बढ़ना आवश्यक है–हम में से बहुत से लोग ऐसे हैं, जिन्हें अभी बहुत दूर जाना है। पिता के शब्द अभी भी हमें याद हैं: ''मैं विश्वास करता हूं; मेरे अविश्वास का उपाय कर।''

विश्वास के स्त्रोत

''अविश्वास'' का उपाय कैसे हो सकता है? हमारा विश्वास कैसे बढ़ सकता है? सबसे पहली बात तो उस पिता की तरह मान लेना है, परन्तु वहां से आगे हम कहां जाएं?

इसी आयत का इस्तेमाल करते हुए, आइए विश्वास के स्रोतों की खोज करें।

सीखना। दुष्टात्मा को निकालने का यीशु का एक कारण उस अविश्वास को दूर करना था, जो उसके सामने था। उस लड़के के ठीक हो जाने पर, ''सब लोग परमेश्वर के महासामर्थ से चकित हुए'' (लूका 9:43)। आज मसीह हमारे बीच में आश्चर्यकर्म करता हुआ चल नहीं रहा, परन्तु आज भी हमारे पास उसके अद्‌भुत कामों के परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए लेख हैं। यूहन्ना ने लिखा है:

> यीशु ने और भी बहुत चिह्न चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि *तुम विश्वास करो,* कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ (यूहन्ना 20:30, 31)।

विश्वास पैदा करने के ढंग का स्पष्ट उत्तर है, ''वचन का अध्ययन कर, विशेषकर यीशु के बारे में वचन का।'' अपनी मृत्यु से पहली रात, मसीह ने प्रेरितों के लिए और ''उन के लिए भी जो *इनके वचन के द्वारा* मुझ पर विश्वास करेंगे'' प्रार्थना की (यूहन्ना 17:20)। पौलुस ने लिखा है, ''सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)। ''मसीह के वचन'' वाक्यांश का अर्थ ''मसीह *का* संदेश'' हो सकता है।[38] यदि आप अपने विश्वास को बढ़ाना चाहते हैं, तो हर रोज़ परमेश्वर के वचन को पढ़ें और इसका अध्ययन करें (देखें प्रेरितों 17:11; 2 तीमुथियुस 2:15)।

जीवन। परन्तु ज्ञान से भरपूर होना ही काफ़ी नहीं है। यदि विश्वास को वास्तविक और सजीव बनाना है (राई के बीज को याद रखें), तो इसे सक्रिय होना आवश्यक है। याकूब ने सिखाया है कि विश्वास कर्मों से ही पूर्ण होता है (याकूब 2:22)। उसने लिखा है कि ''कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है'' (याकूब 2:20) और यह कि ''जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है, वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है'' (याकूब 2:26)।

कुछ न करने के लिए कमज़ोर विश्वास को बहाना बनाने का प्रयास न करें। यद्यपि हम ''निकम्मे'' दास हैं (लूका 17:10), तो भी हमें सेवा करने की आवश्यकता है (मत्ती 20:26)। यद्यपि ''हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए'' (रोमियों 8:26), तो भी हमें प्रार्थना करनी आवश्यक है (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। इसी प्रकार, यद्यपि हमारा विश्वास सीमित है, तो भी इसे करना आवश्यक है। मांसपेशियां व्यायाम से ही सुडौल होती हैं, और विश्वास भी व्यायाम से ही बढ़ता है।

किसी ने सुझाव दिया है कि चुनौती का सामना करने पर हमें यह पूछना चाहिए कि ''इस परिस्थिति में विश्वास क्या करेगा?'' और फिर *करें भी।* हर दिन का आरम्भ इस निश्चय के साथ करें कि ''आज मैं एक विश्वासी की तरह रहूंगा!''

छोड़ना और झुकना। और भी कई सुझाव दिए जा सकते हैं: हमें उस बात से बचना चाहिए, जो हमारे विश्वास का नाश करती है[39] और उस पर ध्यान देना चाहिए जिस से हमारा विश्वास बढ़ता है। इसमें विश्वास मजबूत करने वाले सम्बन्ध (देखें 1 कुरिन्थियों

15:33; 2 तीमुथियुस 1:5) और अपने मनों को विश्वास बढ़ाने वाली जानकारी से भरना शामिल है (फिलिप्पियों 4:8)। फिर परमेश्वर के निकट आने के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं, हमें करना चाहिए (याकूब 4:8) और उस पर भरोसा रखना सीखना चाहिए (भजन संहिता 37:5)।[40] इसमें हमारे प्रार्थनापूर्वक जीवन को बल देना[41] (इफिसियों 1:18; यहूदा 20) और पवित्र शास्त्र पर मनन करने की प्राचीन कला सीखना शामिल है।[42] हमें परमेश्वर के वचन के बारे में सोचने (भजन संहिता 1:2) और जो कुछ परमेश्वर ने हमारे और दूसरों के लिए किया है, उस पर विचार करने का समय निकालने की आवश्यकता है (भजन संहिता 143:5)। इसमें और भी बातें शामिल की जा सकती हैं।[43]

सारांश

आशा है कि इस पाठ से आपको अपने विश्वास को परखने की चुनौती मिली होगी। इससे भी बड़ी बात यह है कि मैं प्रार्थना करता हूं कि आपको अपने विश्वास को बढ़ाने की चुनौती मिले। एक न एक दिन, हम में से हर एक व्यवस्था की चोटी से अव्यवस्था की तराई में नीचे आता है। उस दिन की प्रतीक्षा न करें, जब निजी विश्वास को मजबूत बनाने के लिए जीवन पर आपका नियन्त्रण न हो। विश्वास को बनाने का समय *अभी* है। आपके लिए मेरी वही प्रार्थना है, जो मसीह ने पतरस के लिए की थी: मेरी प्रार्थना है कि ''तेरा विश्वास जाता न रहे'' (लूका 22:32)।

क्या आप प्रभु में विश्वास करते हैं? यदि करते हैं तो दृढ़ता से उस विश्वास का अंगीकार करें (मत्ती 10:32; 1 तीमुथियुस 6:12; 1 यूहन्ना 4:15; यूहन्ना 12:42)। यदि आप ने अभी तक अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा नहीं लिया है, तो आपको चाहिए कि अपने विश्वास का अंगीकार करके उस विश्वास को दिखाने के लिए डुबकी लें (प्रेरितों 2:36-38; मरकुस 16:15, 16; गलातियों 3:26, 27)। फिर अपने विश्वास को बनाते हुए आप जीवन प्रभु में बिता सकते हैं (इफिसियों 2:13)।

नोट्स

यदि आपको अनुप्रास (दोहराव) पसन्द हो, तो आप शास्त्रियों और उनके विश्वास की *कमी,* भीड़ और उसके विश्वास के *खोने* और प्रेरितों और उनके *सीमित* विश्वास की तुलना में *अल्प* (परन्तु बढ़ने वाले) विश्वास की बात कर सकते हैं, जिसकी यीशु ने सराहना की।

इसका वैकल्पिक शीर्षक ''राई के बीज जितना विश्वास'' हो सकता है। पाठ को समझाने के लिए राई के बीज का एक पैकेट ले सकते हैं। आपको चाहिए कि अपने सुनने वालों के याद रखने के लिए मुख्य विचार देते हुए हाथ बाहर निकालने के कार्ड बनाएं। हर कार्ड पर आप एक छोटा-सा राई का बीज चिपका सकते हैं।

यदि आपके सुनने वाले दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़के के चंगा होने की घटना से परिचित हैं, तो संक्षेप में उस कहानी को दोहराकर, जिससे संदेह उत्पन्न होता है और जिससे विश्वास

उत्पन्न होता है, उसकी प्रासंगिकता पर अधिकतर समय बिताएं।

टिप्पणियां

[1]मरकुस 9:15 कहता है कि ''उसे [अर्थात यीशु को] देखते ही सब बहुत आश्चर्य करने लगे।'' हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि वे इसलिए चकित हुए होंगे, क्योंकि उन्होंने मसीह का बदला हुआ रूप देखा था (जैसे पहाड़ से नीचे आने पर मूसा का चेहरा चमक रहा था)। रूपान्तर पर्वत पर होने वाली बात कुछ समय के लिए रहस्य ही रहनी थी। (मरकुस 9:9)। लोग इसलिए चकित हुए हो सकते हैं, क्योंकि उन्हें यीशु के इतनी जल्दी आने की उम्मीद नहीं थी। [2]वह लड़का चीख सकता था (लूका 9:39), परन्तु वह साफ़-साफ़ नहीं बोल सकता था। कुछ संकेत हैं कि यह लड़का शारीरिक बीमारियों *और* दुष्टात्मा दोनों से पीड़ित था: वचन में ''अच्छा हो गया'' (मत्ती 17:18) और ''अच्छा'' किया (लूका 9:42) शब्दों का इस्तेमाल हुआ है, जिनका इस्तेमाल सामान्यतया सुसमाचार के वृत्तांतों में दुष्टात्माओं को निकालने के लिए नहीं बल्कि शारीरिक चंगाई के लिए हुआ है। [3]कई घरों में आग घर के केन्द्र में जलाई जाती थी, और कई नदियों पर पुल नहीं होते थे। दुष्टात्मा के लिए इस जवान को आग और पानी में पटककर फैंकना आसान होता था। पिता ने कहा कि दुष्टात्मा की मंशा उसके पुत्र को नाश करने की थी (मरकुस 9:22); अधिक सम्भावना है कि दुष्टात्मा का उद्देश्य लड़के को सताना था। स्पष्टतया दुष्टात्माओं को रहने के लिए ठिकाना चाहिए था। (''मसीह का जीवन, भाग 3'' में ''यह कौन है?'' और ''जो घृणित हो उसके पास जाना'' पाठों में मत्ती 8:31; मरकुस 5:12 और लूका 8:32 पर टिप्पणियां देखें।) [4]चार्ल्स बी. क्लेमैन, मैडिकल सं., *द अमेरिकन मैडिकल एसोसिएशन होम मैडिकल एनसाइक्लोपीडिया,* अंक 1, s.v. "Epilepsy." [5]अन्धविश्वासी भीड़ को लड़के की पीड़ा का सही-सही कारण गलत समझ आया हो सकता है, परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा पाए लोगों ने कहा कि उस लड़के में दुष्टात्मा थी। इससे परमेश्वर की प्रेरणा में विश्वास रखने वाले सब लोगों के लिए प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। [6]आप अवश्य प्रभु के साथ सहानुभूति रख सकते हैं। आपने अगर कभी कहा नहीं है, तो कम से कम यह सोचा तो है: ''मैं इसे और कितनी देर सहूंगा?'' [7]कई लेखक पुराने नियम में ऐसे ही वाक्यों की ओर ध्यान दिलाते हैं (देखें गिनती 14:27; व्यवस्थाविवरण 32:5, 20; भजन संहिता 95:10)। [8]वहां उपस्थित लोगों में बिना किसी संदेह के विश्वास करने वाला अगर कोई था तो वह दुष्टात्मा ही था ... परन्तु हम अभी उसकी बात नहीं कर रहे हैं। [9]आर.एलन कोल, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मार्क,* संशो. सं. टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैन्ट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन, विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं.), 216. [10]''हम'' शब्द पर ध्यान दें। बीमार बच्चे के माता-पिता जानते हैं कि बच्चे के बीमार होने से केवल वही प्रभावित नहीं होता; इससे पूरा परिवार प्रभावित होता है।

[11]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मार्क,* संशो. संस्क. (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 218. विश्वास की सामर्थ पर टिप्पणी करते हुए ध्यान रखें कि विश्वास के कार्य से अधिक विश्वास पर ज़ोर न दिया जाए। विश्वास पर अतीत की सर्वाधिक बिकने वाली कुछ पुस्तकें परमेश्वर की सामर्थ के बजाय व्यक्ति पर ध्यान देती थीं। [12]वहीं, बार्कले ने इटली के राजनैतिक अगुवे कैमिलो बैंसो डी केवर (1810-61) को उद्धृत किया, जिसने कहा कि वाक्य में इस समझ की आवश्यकता है। [13]मरकुस 9:25 कहता है कि यीशु ने उसे तब डांटा ''जब [उसने] देखा कि लोग दौड़कर भीड़ लगा रहे हैं।'' इससे यह संकेत मिल सकता है कि वह अनावश्यक प्रसिद्धि से बचने के लिए आदमी और लड़के को एक ओर ले गया होगा। कुछ लोग इसके उलट मानते हैं: कि मसीह ने वहां इकट्ठी हुई भीड़ में विश्वास जगाने के लिए आश्चर्यकर्म किया। [14]''फिर कभी प्रवेश न कर'' की आज्ञा से पिता को तसल्ली मिली होगी कि यह मुसीबत दोबारा नहीं आएगी। [15]कोल, 216. [16]इस आयत की तुलना लूका 7:15 से करें। [17]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन लूक* (अबिलेन, टैक्सस: अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1975), 186. [18]मरकुस 9:28 आरम्भ होता है,

''जब वह घर में आया।'' इससे कुछ लोगों ने निष्कर्ष निकाला है कि यीशु और उसके चेले कफ़रनहूम में वापस आए थे (देखें मरकुस 2:1)। बेशक, यह घर कहीं भी हो सकता है।[19]यीशु अक्सर चेलों को उनके ''विश्वास की घटी'' के कारण डांटता था (देखें मत्ती 6:30; 8:26; 14:31; 16:8)।[20]यीशु अभी-अभी पहाड़ से नीचे आया था। ''*इस* पहाड़'' कहते हुए उसने अवश्य ही उस पहाड़ की ओर इशारा किया होगा।

[21]''कोई बात तुम्हारे लिए अनहोनी न होगी'' शब्दों के सम्बन्ध में इसी प्रवचन में पहले आई मरकुस 9:23 में ऐसी ही प्रतिज्ञा पर टिप्पणियां देखें।[22]हिंदी और KJV में आयत 21 जोड़ी गई है, जो अधिकतर प्राचीन हस्तलेखों में नहीं मिलती: ''पर यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के नहीं जाती।'' हिंदी सहित NASB में इस आयत को कोष्ठक में शामिल किया गया है: ''[पर यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के नहीं जाती]।'' इस वाक्य का मुख्य भाग हम इस प्रवचन में बाद में मरकुस 9:29 का अध्ययन करते समय देखेंगे।[23]पौलुस ने भी 1 कुरिन्थियों 13:2 में ऐसे ही अलंकार का प्रयोग किया।[24]कुछ घरों में इस्तेमाल होने वाले ''बर्तनों का ढेर'' या ''कपड़ों का ढेर'' के रूपकों से मिलाया जा सकता है।[25]इस वाक्यांश की चर्चा विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* संशो. संस्क. अंक 2 (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1975),167 में मिलती है।[26]मैं अलंकार की भाषा इस्तेमाल कर रहा हूं। जैसे राई का बीज *स्वाभाविक* तौर पर बढ़ता है, वैसे ही हमें *स्वेच्छा से* करना चाहिए।[27]ह्यूगो मेकोर्ड, *मैकोर्ड न्यू टैस्टामेंट ट्रांसलेशन ऑफ़ द एवरलास्टिंग गॉस्पल* (हैंडर्सन, टैनिसी: फ्रीडहार्डमैन, यूनिवर्सिटी, 1988), 207. [28]कुछ लेखकों का मत है कि ''यह जाति'' वाक्यांश से संकेत मिलता है कि कुछ दुष्टात्मा दूसरों से शक्तिशाली होते हैं। एक बात पक्की है: ''इन आयतों वाले दुष्टात्मा ने लड़के को उस दुष्टात्मा की तरह आज्ञा मानकर नहीं छोड़ा था, जिसका हमने पहले अध्ययन नहीं किया था।''[29]KJV में ''और उपवास'' जोड़ा गया है, परन्तु वे शब्द कई प्राचीन हस्तलेखों में नहीं मिलते हैं।[30]जॉन फ्रैंक्लिन कार्टर, *ए लेमैन'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961), 176.

[31]लकड़ियों की आग पर विचार करें।[32]इस अन्तिम भाग की कुछ सामग्री सदर्न हिल्ज़ चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, अबिलेन, टैक्सस में, 11 सितम्बर 1988 को दिए गए रिक्क एचली, ''डाउन इन द वैली'' प्रवचन पर आधारित है।[33]यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर विस्तार से चर्चा की जा सकती है, परन्तु यह इस पाठ के क्षेत्र से बाहर है।[34]यदि आप इस पर कुछ विचार जोड़ना चाहें, तो ध्यान दें कि क्रम के अनुसार होने वाली अगली घटना अपनी मृत्यु, गाड़े जाने, जी उठने के बारे में मसीह की घोषणा थी (लूका 9:43, 44)। *क्रूस* हमें आश्वस्त करता है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, चाहे हमारे रास्ते में कितनी ही समस्याएं क्यों न आ जाएं। *पुनरुत्थान या यीशु का जी उठना* हमें आश्वस्त करता है कि अन्ततः बुराई पर विजय पा ली जाएगी![35]जॉन एच. वेस्टरहॉफ तृतीय, *विल अवर चिल्ड्रन हैव फेथ?* (न्यू यॉर्क: हार्परकौलिन्स पब्लिशर्स, 1976), 89-99. मैंने उसकी विचारधारा नहीं, उसके शब्दों को लिया है। सार मेरे अपने हैं, उसके नहीं।[36]उसने इसे ''सम्बद्धक'' विश्वास कहा। मैंने अधिक परिचित शब्द ''सम्बद्ध'' लगा दिया है।[37]यह किसी सैकुलर स्कूल में कोई नास्तिक शिक्षक या व्यक्तिगत त्रासदी हो सकती है (उदाहरण के लिए, किसी बच्चे की मृत्यु)। जहां आप रहते हैं, उस समाज के हिसाब से इसे इस्तेमाल करें।[38]द न्यू सैन्चुरी वर्ज़न में ''उन्हें मसीह *के बारे में* बताता है'' है।[39]पिता का विश्वास चेलों और शास्त्रियों के अविश्वास से डोल गया था।[40]स्पष्टतया चेलों का भरोसा परमेश्वर के बजाय अपने ही ऊपर था।

[41]हमारे बाइबल पाठ में विश्वास और प्रार्थना में सम्बन्ध का सुझाव मिलता है (मत्ती 17:20; मरकुस 9:29)।[42]आप इस बात की ओर ध्यान दिला सकते हैं कि बाइबल के अनुसार मनन करना वैसा ही *नहीं* है, जैसा आज आम तौर पर ''मनन'' को समझा जाता है (जो अक्सर व्यर्थ बातों को याद करने पर ध्यान लगाने से थोड़ा अधिक होता है)।[43]उदाहरण के लिए, विश्वास का अंगीकार करने से इसे वास्तविक बनाने में सहायता मिलती है। आपके मन में कोई और सुझाव आ रहा हो तो उसे मिला लें।